निश्चय मोक्षमार्ग ही अध्यात्म का व्यवहार

भगवान आत्मा शुद्ध सच्चिदानन्दमूर्ति है। सत् अर्थात् शाश्वत् ज्ञान और आनन्द का सागर है। इसमें वीतराग-विज्ञानमय जो रमणता होती है, उसे अध्यात्म का व्यवहार कहते है; किन्तु अज्ञानी को इसकी खबर नहीं है ह्न इसकारण बाह्य प्रत्यक्ष प्रमाणरूप व्रत, तप, पूजा, भक्ति इत्यादि भाव को देखकर उन्हें ही अध्यात्म का व्यवहार मान बैठा है। अनादि से वह बाह्य क्रियाकाण्ड, व्रत, नियम आदि पालता है, इसकारण उसका स्वरूप साधना अज्ञानी को सुगम है; परन्तु सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान आत्मा का अनुभव करके उसमें ठहरना ह्न ऐसी वीतरागी अध्यात्मरूप व्यवहार क्रिया को वे नहीं जानते।

भगवान आत्मा त्रिकालध्रुवस्वरूप, शुद्ध द्रव्यवस्तु अक्रियस्वरूप है। परिणमनरूप या बदलनेरूप क्रिया इसमें नहीं है। परिणमना या बदलना यह क्रिया तो पर्याय में है तथा त्रिकाली ध्रुव अक्रियस्वरूप आत्मा निश्चय है और उसका अवलम्बन लेकर मोक्षमार्ग साधना व्यवहार है। राग से भिन्न अन्दर सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान ध्रुव पड़ा है, वह अक्रिय है, परिणमन करने की क्रिया उसमें नहीं है ह्न ऐसे ध्रुव अक्रियस्वरूप भगवान आत्मा का अवलम्बन लेकर उसी में स्थित होना मोक्षमार्ग है ह्न यह निश्चय मोक्षमार्ग अध्यात्म का व्यवहार है।

शुद्ध द्रव्यवस्तु निश्चय तथा उसके आश्रय से मोक्षमार्ग का प्रगट होना व्यवहार है। शुभरागरूप व्यवहारमोक्षमार्ग की यहाँ बात नहीं है। यहाँ तो केवलज्ञानस्वभावी आनन्दकन्द प्रभु, शुद्ध, ध्रुव, अक्रिय वस्तु; जिसमें बदलाव या परिणमन नहीं है, वह निश्चय है और पर्याय में जो निश्चय मोक्षमार्ग प्रगट होता है, वह व्यवहार है। भाई ! ऐसा मार्ग है। चौरासी के अवतार में रखड़ते हुये इन संसारी प्राणियों को यह बात सुनने को आज तक मिली ही नहीं है।

ह्न प्रवचनरत्नाकर भाग-2, पृष्ठ : 89

देखना न भूलें

साधना चैनल पर प्रतिदिन रात्रि में 10.20 पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनों को देखना/सुनना न भूलें।

ेहीक्षज़ु।षेघर्ज़ी

ेहीक्षज़ु।षेघर्ज़ी सर्हें ेर्ही ़ज्ञीव शीर श्रज़्क्षअ
ेहीक्षज़ु।षेघर्ज़ी वर्ज़ें ?ज़्क्ष।?ज़्क्ष सज़ी; ऴश्रज़्क्षअअ

वर्ष : २४ | २७४ | अंक : १०

प्रवचनसार पद्यानुवाद

आचरणप्रज्ञापनाधिकार

दीक्षा समय जो दें प्रव्रज्या वे गुरु दो भेदयुत।
छेदोपथापक श्रमण हैं अर शेष सब निर्यापका ।।२१०।।
यदि यत्नपूर्वक रहें पर देहिक क्रिया में छेद हो।
आलोचना द्वारा अरे उसका करें परिमार्जन ।।२११।।
किन्तु यदि यति छेद में उपयुक्त होकर भ्रष्ट हों।
तो योग्य गुरु के मार्गदर्शन में करें आलोचना ।।२१२।।युग्मम्।।
हे श्रमणजन! अधिवास में या विवास में बसते हुए।
प्रतिबंध के परिहारपूर्वक छेदविरहित ही रहो ।।२१३।।
रे ज्ञान-दर्शन में सदा प्रतिबद्ध एवं मूलगुण।
जो यत्नतः पालन करें बस हैं वही पूरण श्रमण ।।२१४।।
आवास में उपवास में आहार विकथा उपधि में।
श्रमणजन व विहार में प्रतिबंध न चाहें श्रमण ।।२१५।।
शयन आसन खड़े रहना गमन आदिक क्रिया में।
यदि अयत्नाचार है तो सदा हिंसा जानना ।।२१६।।
प्राणी मरें या ना मरें हिंसा अयत्नाचार से।
तब बंध होता है नहीं जब रहें यत्नाचार से ।।२१७।।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

अन्य वस्तु निमित्तमात्र है

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दि के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 35 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

नाज्ञो विज्ञत्वमायाति विज्ञो नाज्ञत्वमृच्छति ।
निमित्तमात्रमन्यस्तु गतेर्धर्मास्तिकायवत् ।।35।।

जो पुरुष अज्ञानी अर्थात् तत्त्वज्ञान की उत्पत्ति के लिये अयोग्य है, वह विज्ञ (ज्ञानी) नहीं हो सकता और जो विशेष ज्ञानी है वह अज्ञानी नहीं हो सकता। जिसप्रकार जीव-पुद्गल की गति में धर्मास्तिकाय निमित्तमात्र है; उसीप्रकार अन्य पदार्थ भी निमित्तमात्र हैं।

(गतांक से आगे...)

''जिस द्रव्य में, जिस समय, जिस पर्याय का होना निश्चित होता है; वह द्रव्य, उस समय, उसी पर्याय की उन्मुखतारूप वर्तता है'' ह्न इसमें उपादान, निश्चय और क्रमबद्धपना तीनों समाहित हो जाते हैं। उपादान के साथ निमित्त और निश्चय के साथ व्यवहार होता है; लेकिन कार्य के होने में ये कुछ करते नहीं हैं।

यहाँ प्रश्न है कि जब गुरु शिष्य को कुछ समझा ही नहीं सकते है, तो फिर गुरु का क्या माहात्म्य है ?

इसके उत्तरस्वरूप आचार्य कहते हैं कि सत् सत्रूप ही है ह्न ऐसा जो शिष्य स्वीकार करता है, उसे गुरु का बहुमान आये बिना नहीं रहता। निश्चय से अपने आत्मतत्त्व की महीमा है और व्यवहार से गुरु की महीमा अवश्य आती है और इसमें ही गुरु का माहात्म्य है।

जीव-पुद्गल स्वयं गति करते है, तब धर्मद्रव्य उसमें निमित्त होता है। यदि धर्मद्रव्य स्वयं गति करा सकता तो आकाशद्रव्य को भी गति होना चाहिये; किन्तु ऐसा होता नहीं है। जीव-पुद्गल में गति करने की शक्ति है, अत: वे गति करते हैं और उससमय धर्मद्रव्य हस्तावलंबवत् सहायकमात्र है। वहाँ जीव-पुद्गल के

गतिकाल में धर्मद्रव्य सहकारीकारण है। इसीप्रकार जब शिष्य स्वयं समझने की पात्रता रखता है, तब उसे समझानेवाले गुरु सहकारीकारण या निमित्त कहलाते है।

निश्चय से अपना आत्मा ही अपना गुरु है और व्यवहार से बाह्यगुरु निमित्त है, इसलिये गुरु की सेवा-सुश्रुषा भी करना चाहिये। देव-शास्त्र-गुरु, भगवान की प्रतिमा, साधर्मी अथवा अन्य किसी भी माध्यम से जब शिष्य को धर्म का सच्चा स्वरूप ज्ञात होता है, उससमय जो कोई भी उसमें निमित्त होते हैं, उनके प्रति शिष्य को बहुमान का भाव आता ही है।

यहाँ कोई कहता है कि लोक में अग्नि हो तो पानी गरम होता है, बर्फ डालने से पानी थंडा होता है, बाई हो तो रोटी बनती है, गुरु हो तो ज्ञान होता है इत्यादि बातें प्रत्यक्ष देखी जाती है और आप कहते हो कि निमित्त से कुछ नहीं होता ?

उससे आचार्य कहते है कि हे भाई ! तुम्हारी दृष्टि निमित्ताधीन है। वास्तव में द्रव्य के उपादानकाल में जो पर्याय होनी होती है, उससमय उस पर्याय के अनुकूल निमित्त वहाँ उपस्थित होते है; किन्तु वे निमित्त वस्तु में कुछ फेरफार नहीं कर सकते। कार्य तो केवल उपादान से ही होता है और उससमय अन्य द्रव्य निमित्त होते है ह्न इस नियम को जो समझ लेवे उसके ज्ञान में स्वतंत्रता का ढिंढोरा पिट जाता है।

यहाँ पूज्यपादस्वामी उदाहरण देकर समझाते है कि ह्न जिसमें धर्म समझने की योग्यता ही नहीं है ह्न ऐसा अज्ञानी जीव लाखों तीर्थंकरों का योग होने पर भी धर्म नहीं समझ सकता। जिसप्रकार बगुले को पोपट की तरह पढ़ाया नहीं जा सकता; क्योंकि बगुले में पढने की योग्यता ही नहीं है उसीप्रकार जिस पर्याय में किसी कार्य के होने की योग्यता ही नहीं हो तो उस पर्याय को लाख क्या, अनन्त निमित्त मिले तो भी वह कार्य नहीं हो सकता।

अपने आत्मस्वरूप की दृष्टि और ज्ञान में स्थित हुये ज्ञानी पुरुष को लाखों प्रतिकूलता आवे फिर भी वह अपने स्वरूप से कभी ड़िगता नहीं है। इससे यही सिद्ध होता है कि किसी भी कार्य में परपदार्थ अकिंचित्कर ही है।

गति करते हुये जीव-पुद्गलों को गति करने में धर्मद्रव्य निमित्त होता है; किन्तु गतिरूप परिणमन न करनेवाले जीव-पुद्गल को धर्मद्रव्य गति नहीं करा सकता।

यह गाथा बहुत अच्छी है। लोग चिल्ला-चिल्लाकर कहते है कि निमित्त उपादान में मदद करता है; किन्तु विगत गाथा और इस गाथा में यहीं कहा जा रहा है कि कार्य केवल उपादान से ही होता है, उसमें अन्यपदार्थ केवल निमित्तमात्र है। लोग चिल्लाते है तो चिल्लाने दो, उससे वस्तु के स्वरूप में कोई फेरफार नहीं होता।

इस संबंध में शिष्य कहता है कि महाराज ! आपने तो निमित्त को छिलके की भाँति उड़ा दिया है। जिसप्रकार दाने को निकालकर छिलके को फेंक देते है, उसीप्रकार आपने निमित्त को फेंक दिया है।

उससे आचार्यदेव कहते है कि वास्तव में निमित्त अंकिचित्कर है। किसी भी कार्य के उत्पन्न या विध्वंस में गुरु, मित्र अथवा वैरी तो केवल निमित्तमात्र है। किसी भी कार्य के उत्पाद या विनाश में उसकी योग्यता ही साक्षात् साधक होती है। जगत की प्रत्येक वस्तु के द्रव्य-गुण-पर्याय हेतु यह सामान्य नियम है।

मिट्टी की योग्यता से ही घड़ा उत्पन्न होता है, कुम्हार से नहीं। जड़ या चेतन कोई भी पदार्थ अपनी वर्तमान अवस्था की उत्पत्ति बिना नहीं होता। स्वयं से उत्पन्न होनेवाली अवस्था को दूजा कोई क्या कर सकता है ? उसीप्रकार वस्तु की अपनी पूर्व पर्याय का व्यय होवे, उसमें अन्य पदार्थ क्या करें ? अपने ज्ञान-दर्शन-आनन्द-वीर्य आदि के प्रगटने में अपना आत्मा स्वयं कार्य करता है। स्वयं की योग्यता से ही ये समस्त गुण प्रगट होते हैं।

प्रत्येक द्रव्य अपने-अपने द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव में रहता है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य को स्पर्श भी नहीं करता तो फिर एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कार्य क्या करेगा ? समयसार में यह बात स्पष्ट आई है कि जड़-चेतन प्रत्येक प्रदार्थ अपने-अपने गुणों से युक्त हैं, वे अपने-अपने गुणों को स्पर्श करते हैं; किन्तु एक द्रव्य अन्य द्रव्य में कुछ फेरफार नहीं कर सकता।

प्रत्येक द्रव्य में उत्पाद-व्ययरूप कार्य अपने सामर्थ्य से होता है। निमित्त के सामर्थ्य से तीन काल में कुछ नहीं हुआ और न कुछ होगा। अहाहा ! यह सिद्धान्त समझे तो जीव को कितनी शांति प्राप्त हो। मेरा ज्ञान-आनन्द-सुखादिरूप कार्य मुझसे होता है। उसमें स्त्री-पुत्र परिवार, मकान-रुपया-पैसा आदि कुछ भी बिगाड़-सुधार

नहीं कर सकते। मेरे ज्ञान-आनन्दरूप कार्य में परपदार्थ बिल्कुल अंकिचित्कर हैं। स्त्री-पुत्र, रुपया-पैसा आदि से मुझे सुख की प्राप्ति होती है ह्न यह बात मिथ्या है।

यहाँ शिष्य पुन: प्रश्न करता है कि परीक्षा में पास होवे तो आनन्द होता है, वह आनन्द पास हुआ इसलिये हुआ है न ?

आचार्य कहते है कि हे भाई ! तुझे जो आनन्द हुआ, वह तेरे स्वयं के आनन्दगुण का कार्य है, तेरे स्वयं की सामर्थ्य है। परीक्षा में पास होने से तुझे आनन्द नहीं हुआ।

जिसे स्वभाव का निर्णय है, उसे अपने ज्ञानानन्द गुणों का भी पक्का निर्णय है। मुझमें स्वयं में ज्ञानादिरूप परिणमने की योग्यता है, कोई परद्रव्य मुझे इन गुणोंरूप परिणमाता नहीं है ह्न ऐसा सच्चा निर्णय उसे हुआ है। वहाँ अनन्त परद्रव्यों से दृष्टि हटकर जीव की अपने स्वभाव पर ही दृष्टि जम गई है।

अपना आनन्द प्रगट करने की शक्ति स्वयं में है, अत: परद्रव्य मुझे अनुकूल या प्रतिकूल है, कर्मादिक मुझे दु:खी कराते हैं ह्न ऐसी मिथ्याकल्पना छोड़कर अपने आनन्द को प्राप्त करने हेतु प्रयत्न करना चाहिये।

वास्तव में स्व-स्वरूप का निर्णय न करके स्वयं की विपरीत मान्यता से ही यह जीव दु:खी हो रहा है। अनंत संसार में रखड़ रहा है, इसलिये किसी भी कार्य के बिगाड़ या सुधार में उसकी योग्यता ही साक्षात् कारण है।

यहाँ प्रश्न है कि यदि योग्यता साक्षात् कारण है तो परंपरा कारण क्या है ? उससे कहते है कि निमित्त को परंपरा कारण कहा जाता है; किन्तु यह व्यवहारनय का कथन है। निमित्त साधक नहीं है, फिर भी उसे साधक कहना व्यवहार है।

जैसे एकसाथ गतिरूप परिणमन में उन्मुख हुये अनेक पदार्थ अर्थात् एक या अनेक जीव-पुद्गल, तैजस-औदारिक शरीर के परमाणु आदि को गति करने में साक्षात् कारण उन पदार्थों की गमनशक्ति है; अत: गमन करने में उन्मुख हुई पर्याय ही गति का साक्षात् कारण है और उससमय धर्मद्रव्य निमित्त है।

इसप्रकार जिस पर्याय में, जिस समय, जो कार्य होने की योग्यता होती है, उससमय वही कार्य होता है। उसमें यथार्थ कारण उस पर्याय की स्वयं की योग्यता है और आरोपित कारण निमित्त है। **(क्रमश:)**

स्वभावदर्शन और विभावदर्शन

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 13-14 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथायें मूलत: इसप्रकार है ह्न

तह दंसणउवओगो ससहावेदरवियप्पदो दुविहो ।
केवलमिंदियरहियं असहायं तं सहावमिदि भणिदं ।।१३।।
चक्खु अचक्खू ओही तिण्णि विभणिदं विहावदिट्ठि त्ति ।
पज्जाओ दुवियप्पो सपरावेक्खो य णिरवेक्खो ।।१४।।

ज्ञानोपयोग के समान दर्शनोपयोग भी स्वभाव और विभाव के भेद से दो प्रकार का है, जो केवल इन्द्रियरहित और असहाय है। वह केवलदर्शन स्वभाव दर्शनोपयोग है।

चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन और अवधिदर्शन विभावदर्शन कहे गये हैं। पर्याय दो प्रकार की है। स्वपरापेक्ष और निरपेक्ष ।

(गतांक से आगे...)

तीर्थंकर परमदेव शुद्धसद्भूतव्यवहारनय स्वरूप हैं, वह शुद्धसद्भूत व्यवहारनय सादि-अनंत, अमूर्तिक और अतीन्द्रियस्वभाववाला है।

भगवान के स्वयं तो नय होते नहीं, किन्तु साधकजीव केवली भगवान के स्वरूप का विचार कता है, तब उसको नय होते हैं।

ऐसे तीर्थंकर भगवान भव्यजीवों के द्वारा प्रत्यक्ष वंदनीय है। सिद्ध भगवान भी वंदनीय है; परन्तु वे परोक्ष हैं, जबकि तीर्थंकर भगवान प्रत्यक्ष वंदनीय है। ऐसे भगवान के केवलज्ञान की तरह यह कार्यदृष्टि भी युगपद लोकालोक में व्यापनेवाली है।

केवली के स्वयं नय नहीं होते। वे तो पूर्ण नयातीत हो गये हैं। उनके श्रुतज्ञान नहीं है; अपितु केवलज्ञान है। नय तो श्रुतज्ञानी के ही होते हैं। केवली का विचार करने पर साधकजीव के शुद्धसद्भूत व्यवहारनय होता है; इसलिये भगवान को भी उस नयस्वरूप

कह दिया है अर्थात् ज्ञानादिदशा भी त्रिकाल नहीं है, नई प्रकट हुई है; अत: वह आश्रय करनेयोग्य नहीं है। आश्रय करनेयोग्य तो त्रिकाल एकरूप स्वभाव ही है।

त्रिकाली स्वरूप श्रद्धान तो निश्चय है और नवीन प्रकट हुई कार्यस्वभावदृष्टि व्यवहार है। कार्यदृष्टि तो शुद्धसद्भूतव्यवहारनय का विषय है और आत्मा में विद्यमान त्रिकाल कारणस्वभाव दर्शनोपयोग शुद्ध निश्चयनय का विषय है। उस त्रिकाली का आश्रय करना योग्य है; क्योंकि उसी के आश्रय से निर्मल कार्य प्रकट होता है।

देखो आत्मा उपयोगस्वरूप है, उसमें (1) त्रिकाल कारणस्वभाव ज्ञानोपयोग (2) त्रिकाल कारणस्वभाव दर्शनोपयोग अथवा त्रिकाली सहजस्वरूप श्रद्धान ह्न यह दोनों निश्चय नय के विषय हैं। (1) कार्यस्वभाव ज्ञानोपयोग (2) कार्यस्वभाव दर्शनोपयोग ह्न ये दोनों व्यवहारनय के विषय हैं। इनमें से शुद्ध निश्चयनय के विषय का अवलम्बन करना ही मोक्ष का कारण है।

उपर्युक्त चारों ही प्रकार स्वभावरूप हैं। इस भाँति कार्य और कारणरूप से स्वभाव दर्शनोपयोग कहा। विभावदर्शनोपयोग आगामी गाथा में कहेंगे।

स्वभावदर्शनोपयोग के साथ स्वरूपश्रद्धा को समाविष्ट कर दिया है; यद्यपि श्रद्धा और दर्शनोपयोग का लक्षण भिन्न-भिन्न हैं; तथापि दोनों सामान्यरूप हैं। इसलिये यहाँ दर्शनोपयोग में श्रद्धा का भी समावेश कर लिया है।

अब तेरहवीं गाथा की टीका पूरी करते हुये टीकाकार मुनिराज पद्मप्रभमलधारि देव निम्न श्लोक कहते हैं ह्न

दृग्ज्ञप्तिवृत्त्यात्मकमेकमेव, चैतन्यसामान्यनिजात्मतत्त्वम् ।
मुक्तिस्पृहाणामयनं तदुचैरेतेन मार्गेण विना न मोक्षः ।।23।।

दृशि-ज्ञप्ति-वृत्तिस्वरूप (दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप से परिणमता हुआ) एक चैतन्यसामान्यरूप निजात्मतत्त्व ही मोक्षेच्छुओं को प्रसिद्धमार्ग है, उस मार्ग के बिना मोक्ष नहीं है।

सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप पर्यायवाला अभेद आत्मा ही मोक्ष का मार्ग है अथवा दर्शन-ज्ञान-चारित्रस्वरूप त्रिकाली चैतन्यसामान्य आत्मतत्त्व ही मोक्षार्थियों को मोक्ष का प्रसिद्ध मार्ग है। इसके अतिरिक्त अन्य किसी मार्ग से मोक्ष नहीं है।

अब चौदहवीं गाथा की टीका में कहते हैं ह्न जिसप्रकार मतिज्ञानावरणी कर्म के क्षयोपशम से (जीव) मूर्त वस्तु को जानता है; उसीप्रकार चक्षुदर्शनावरणी कर्म के क्षयोपशम से (जीव) मूर्त वस्तु को देखता है।

मतिज्ञान से आत्मा अंतर का स्वसंवेदन करे, यह बात यहाँ गौण है; यहाँ तो पर के जानने की अपेक्षा से बात है। सम्यक्मतिश्रुतज्ञान तो आत्मा को स्वसंवेदन प्रत्यक्ष करता है। स्वरूप को स्वसंवेदन प्रत्यक्ष करे और मूर्त-अमूर्त दोनों को जाने ह्न ऐसा सम्यक्मतिज्ञान है, किन्तु यहाँ दर्शनोपयोग का स्वरूप समझाना है, इसलिये मतिज्ञान को भी मूर्त को ही जाननेवाला कहा है। उसीतरह चक्षुदर्शनोपयोग से जीव मूर्त पदार्थ को देखता है। जिसप्रकार श्रुतज्ञानावरणी कर्म के क्षयोपशम से (जीव) श्रुत द्वारा द्रव्यश्रुत में कथित मूर्त-अमूर्त समस्त वस्तुसमूह को परोक्ष रीति से जानता है; उसीप्रकार अचक्षुदर्शनावरणी कर्म के क्षयोपशम से (जीव) स्पर्शन, रसन, घ्राण और कर्ण द्वारा उसके योग्य विषयों को देखता है।

यहाँ इन्द्रियों के विषयों की बात ली है। यद्यपि मन से भी अचक्षुदर्शनोपयोग होता है, किन्तु यहाँ त्रिकालकारणस्वभाव की महिमा बतलाने के लिये चक्षु-अचक्षु दर्शन का बहुत स्थूल वर्णन किया है।

जिसप्रकार अवधिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से जीव शुद्धपुद्गल (परमाणु) पर्यंत तक मूर्तद्रव्य को जान सकता है; उसीप्रकार अवधिदर्शनावरण कर्म के क्षयोपशम से जीव समस्त मूर्त पदार्थों को देखता है, अवधिज्ञान उदय और क्षयोपशमभाव को भी जानता है; परन्तु यहाँ तो 'परमाणु को जानता है' मात्र इतनी बात ली है।

भगवान के केवलज्ञान के साथ वर्तता जो केवलदर्शनोपयोग है, वह स्वभाव है और चक्षु-अचक्षु अवधिदर्शन विभाव है ह्न इसप्रकार उपयोग का कथन करने के बाद अब पर्याय के स्वरूप का कथन करेंगे। **(क्रमश:)**

मैं तो अरस, अरूपी ज्ञानानन्दस्वभाव आत्मा हूँ ह्न जो अनादि-अनंत है, अजर-अमर है, न कभी जन्मता है और न कभी मरता है। जन्मना मरना तो पर्याय पलटने को कहते हैं। मैं मात्र पर्याय नहीं हूँ, जिसमें से पर्याय आती है, मैं तो ऐसा त्रैकालिक पदार्थ हूँ। **ह्न सत्य की खोज, पृष्ठ-88**

छहढाला प्रवचन

वीतराग-विज्ञान को नमस्कार

तीन भुवन में सार वीतराग-विज्ञानता।
शिवस्वरूप शिवकार नमहुँ त्रियोग सम्हारिकै।।1।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे ...)

ऊर्ध्वलोक में सिद्धालय से लेकर सौधर्म स्वर्ग तक, मध्यलोक में असंख्यात द्वीप-समुद्रों में और अधोलोक में नीचे, ऐसे तीनों लोक में आत्मा के लिए सारभूत एक वीतराग विज्ञान ही है। 'वीतराग' कहने से सम्यक्चारित्र आया और 'विज्ञान' कहने से सम्यग्ज्ञान व सम्यग्दर्शन आया; इसप्रकार वीतराग-विज्ञान में सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र तीनों समा जाते हैं। ऐसा वीतराग-विज्ञान शिवस्वरूप है, आनन्दस्वरूप है, मंगलस्वरूप है।

पूर्ण ज्ञान व पूर्ण आनंदस्वरूप ऐसा केवलज्ञान महान सारभूत है; साधक के जो आंशिक वीतरागविज्ञान है, वह भी आनन्दरूप है और वह पूर्णानन्दरूप मोक्ष का कारण है। देखो, प्रारम्भ से ही वीतरागविज्ञान को मोक्ष का कारण कहा, किन्तु शुभ राग को मोक्ष का कारण नहीं कहा।

इसप्रकार मोक्ष के कारण रूप ऐसे वीतराग-विज्ञान को ही साररूप मानकर उसे मैं नमस्कार करता हूँ; सावधानी से अर्थात् उस तरफ के उद्यमपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

राग से भिन्न होना और शुद्धस्वभाव के सन्मुख होना ह्न यह निश्चय सावधानी है। ऐसी निश्चय सावधानी से अर्थात् निर्मोह भाव से मैं सर्वज्ञ को नमस्कार करता हूँ और बाह्य में शुभराग के निमित्तरूप मन-वचन-कायरूप त्रियोग की सावधानी है।

आत्मा के भान व अनुभवपूर्वक छद्मस्थ को भी वीतराग विज्ञान होता है। चतुर्थ गुणस्थान से प्रारम्भ होकर जितना सम्यग्ज्ञान है, वह रागरहित ही है; ज्ञान में राग नहीं। आत्मा का जो स्वसंवेदन है, वह वीतराग ही होता है, रागवाला नहीं होता ह्न यह बात परमात्मप्रकाश में 'वीतराग स्वसंवेदन' ऐसा कहकर समझायी है।

साधक भूमिका में राग हो भले, किन्तु उसका जो स्वसंवेदन ज्ञान है, वह तो वीतराग ही है। यहाँ मुख्यरूप से पूर्ण वीतरागी केवलज्ञान की बात है।

अहो, जगत में जो कोई जीव अपना हित करना चाहता हो, उसे पूर्ण केवलज्ञान पद ही नमस्कार करने योग्य है, आदर करने योग्य है; उसे ही हितरूप समझकर प्रगट करने योग्य है। सर्वज्ञ पद की अचिंत्य ह्न अपार महिमा जानकर मेरा अन्तर उस वीतराग-विज्ञान की ओर ढलता है ह्न नमता है ह्न ऐसी परिणति का नाम साधकदशा है।

देखो, इस मांगलिक में भगवान के गुणों को पहचान कर नमस्कार किया गया है। उमास्वामी कहते हैं कि **'वन्दे तद्गुणलब्धये'** अर्थात् भगवान जैसे अपने गुणों की प्राप्ति के लिए मैं उन्हें वन्दन करता हूँ। जो वीतराग-विज्ञानरूप केवलज्ञान है, वह पर्याय है और वह प्रगट करने की आत्मा में ताकत है। राग से रहित एक समय में तीनकाल तीनलोक को जाने ह्न ऐसा जिसका सामर्थ्य है, वह पर्याय आत्मा में से ही प्रगट होती है।

ऐसे आत्मा को श्रद्धा में लेकर, पहचानपूर्वक वीतराग-विज्ञान को जिसने नमस्कार किया, उसको अपनी पर्याय में भी वीतराग-विज्ञान का अंश प्रगट हुआ; वह अपूर्व मंगल है, वह साररूप है।

'सार' अर्थात् मक्खन। जैसे दही का मंथन करके उसमें से मक्खन निकालते हैं, वैसे तीनलोक का मंथन करके सन्तों ने उसमें से कौनसा सार निकाला? तो कहते हैं कि 'तीन भुवन में सार, वीतराग-विज्ञानता।' जगत में वीतराग-विज्ञान ही सारभूत है, इसके अतिरिक्त राग से धर्म मानना; वह तो निःसार, जल के मंथन करने जैसा है, उसमें से कुछ सार निकलनेवाला नहीं। ज्ञानियों ने जगत के सभी तत्त्वों को जानकर उनका मंथन करके उनमें से शुद्ध चैतन्यमय केवलज्ञानरूपी मक्खन निकाला, उसे ही साररूप समझ के अंगीकार किया। अन्तर में ध्यान के द्वारा चैतन्य का मंथन करके मुनिवरों ने वीतराग-विज्ञानरूप सार प्राप्त किया, अन्य बाह्य दृष्टिवन्त जीव तो पुण्यरूप पानी में ही फँस गये ह्न वे शुभराग में ही सन्तुष्ट हो गये, परन्तु राग से पार वीतराग-विज्ञान को उन्होंने नहीं पहचाना। वीतराग-विज्ञान को साररूप समझकर उनका बहुमान करना ह्न यह मंगल है।

आत्मा में से राग-द्वेष टल गये व ज्ञान की पूर्णदशा प्रगट हुई, तब वहाँ क्षुधा-तृषादि १८ दोषरहित, वीतरागतासहित परम आनन्दमय केवलज्ञान हुआ; ऐसा केवलज्ञान अपने में प्रगट करने के लिए उसकी प्रतीति करके वन्दन व आदर करते हैं, अपने आत्मा में उसे बुलाते हैं। इसतरह सर्वज्ञदेव की श्रद्धा व आदर के साथ शास्त्र का प्रारम्भ होता है। ●

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : एक ओर तो पर्याय को क्रमबद्ध कहते हो और दूसरी ओर पर्याय से दृष्टि हटाने को भी कहते हो ह्न ऐसा कैसे ?

उत्तर : पर्याय क्रमबद्ध होती है ह्न ऐसा जाने तो पर्याय का कर्तृत्त्व छूटकर अकर्त्ता स्वभावी द्रव्य के ऊपर दृष्टि जाती है। क्रमबद्ध के ऊपर दृष्टि रखकर क्रमबद्ध का निर्णय नहीं होता। द्रव्य के ऊपर दृष्टि करने पर ही, क्रमबद्ध का सच्चा निर्णय होता है। अरे ! क्रमबद्ध तो सर्वज्ञ का प्राण है।

प्रश्न : क्रमबद्ध में क्रमबद्ध की विशेषता है कि द्रव्य की ?

उत्तर : क्रमबद्ध में ज्ञायक द्रव्य की विशेषता है। क्रमबद्ध में अकर्तापन सिद्ध करके ज्ञायकपना बताया है।

प्रश्न : वस्तु में नियत और अनियत दोनों धर्म एकसाथ हैं और दोनों ही ज्ञानी को स्वीकार हैं ह्न ऐसी स्थिति में आप वस्तु को क्रमबद्ध ही क्यों कहते हैं, साथ वाले अक्रम को क्यों नहीं स्वीकारते ?

उत्तर : नियत और उसके साथ नियत के अतिरिक्त दूसरे अनियत अर्थात् पुरुषार्थ, काल, स्वभाव, ज्ञान, श्रद्धा, निमित्त आदि को ज्ञानी स्वीकार करता है। उसकी दृष्टि में नियत-अनियत का मेल है।

यहाँ अनियत का अर्थ अक्रमबद्ध नहीं है; अपितु नियत के साथ रहनेवाले नियत के अलावा पुरुषार्थ आदि धर्मों को यहाँ अनियत संज्ञा दी गई है। इसप्रकार वस्तु में नियत-अनियत दोनों धर्म एकसमय में एकसाथ रहते हैं। यही अनेकान्त स्वभाव है।

प्रश्न : सम्यक् नियतिवाद का क्या अर्थ है ?

उत्तर : जिस पदार्थ में, जिस समय में, जिस क्षेत्र में, जिस निमित्त से, जैसा होना है; वैसा ही होगा, उसमें किंचित् भी फेरफार करने में कोई समर्थ नहीं है ह्न ऐसा ज्ञान में निर्णय करना सम्यक्नियतिवाद है और ऐसे निर्णय में स्वभाव की तरफ का अनंत पुरुषार्थ आ जाता है।

प्रश्न : मिथ्यानियतिवाद को गृहीत मिथ्यात्व क्यों कहा है ?

उत्तर : निमित्त व राग से धर्म होता है, आत्मा शरीरादि की क्रिया कर सकता है ह्न ऐसी मान्यतारूप अगृहीत मिथ्यात्व तो अनादि से ही था, फिर शास्त्र बांचकर अथवा कुगुरुआदि के निमित्त से मिथ्यानियतिवाद का नवीन कदाग्रह ग्रहण किया; इसलिये उसे गृहीत मिथ्यात्व कहा गया है। जिसको अनादि का अगृहीत मिथ्यात्व होता है; उसी को गृहीत मिथ्यात्व होता है। इन्द्रिय विषयों के पोषण के लिये 'जो होना होगा, वह होगा' ह्न ऐसा कहकर एक स्वच्छन्दता का मार्ग निकाल लेते हैं, उसका नाम गृहीत मिथ्यात्व है।

प्रश्न : वस्तु का परिणमन क्रमबद्ध मानने पर तो ऐसा लगता है कि पुरुषार्थ का कुछ काम ही नहीं, पुरुषार्थ निरर्थक है; क्योंकि जब सबकुछ निश्चित है तो सम्यग्दर्शन आदि भी निश्चित मानने होंगे; फिर पुरुषार्थ करने का कहाँ अवकाश है ?

उत्तर : क्रमबद्धपर्याय को स्वीकार करने से पुरुषार्थ उड जाता है ह्न ऐसा भय तो अज्ञानी को लगता है; क्योंकि हम अभी पुरुषार्थ का ही सही स्वरूप नही जानते हैं; वास्तव में क्रमबद्धपर्याय को मानने से सम्यक् पुरुषार्थ का आरंभ होता है; क्योंकि सारे जगत का परिणमन क्रमबद्ध मानने से पर्याय पर दृष्टि नहीं रहती, किसी भी पर्याय को हटाने या लाने का विकल्प नहीं रहता और दृष्टि स्वभावसन्मुख हो जाती है। यही सम्यक् पुरुषार्थ है।

जबतक फेरफार करने की दृष्टि होगी तबतक उल्टा व निरर्थक पुरुषार्थ रहेगा और जब फेरफार की दृष्टि खतम होकर सहज स्वभाव की दृष्टि होगी तो सम्यक् पुरुषार्थ शुरु होगा। क्रमबद्धपर्याय का निर्णय करने से 'मैं पर का कर दूँ, व्यवहार करते-करते निश्चय होता है' ह्न इत्यादि सभी उलटी मान्यतायें समाप्त हो जाती हैं और अन्दर स्वभाव में स्थिर होने का मार्ग खुल जाता है।

प्रशिक्षण-शिविर देवलाली में....

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर द्वारा संचालित एवं पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के तत्त्वावधान में 40 वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष **दिनांक 9 मई से 26 मई, 2006** तक अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित **देवलाली-नासिक (महा.)** में आयोजित होने जा रहा है।

इस अवसर पर ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अतिरिक्त अनेक विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा। सभी साधर्मी उपस्थित होकर धर्मलाभ लेवें।

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द सम्पन्न

1. **जयपुर (राज.) :** यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक ७ से १४ मार्च, २००६ तक पर्व के अवसर पर श्रीमती चित्रादेवी ध.प. श्री प्रवीणकुमारजी शाह की ओर से पंचमेरु-नन्दीश्वर विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: पूजन-विधान के पश्चात् पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के योगसार प्राभृत ग्रन्थ पर एवं रात्रि में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के पुरुषार्थसिद्ध्युपाय ग्रन्थ पर प्रवचन हुये। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा एवं पण्डित आदित्यजी खुरई ने सम्पन्न कराये।

2. **मालेगाँव (महा.) :** पर्व के अवसर पर समाज के विशेष आमंत्रण पर जयपुर से पधारे ब्र. यशपालजी जैन द्वारा दोनों समय तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय पर प्रवचनों का लाभ मिला। आपके द्वारा कण्ठपाठ की प्रेरणा दी गई। अनेक लोगों ने कण्ठपाठ सुनाया।

3. **अहमदाबाद (गुज.) :** यहाँ श्री दिग. जैन सीमंधर जिनालय वस्त्रापुर में श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के प्रात: समयसार व रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ एवं पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली ने कराये।

दोनों समय गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति हुई।

नवरंगपुरा में पण्डित कोमलचन्दजी जैन टडा के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

4. **मुम्बई :** श्री दि.जैन मुमुक्षु समाज बृहन्मुम्बई के संयोजकत्व में मुम्बई के उपनगरों में निम्नानुसार आध्यात्मिक व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया ह्न

श्री सीमन्धर जिनालय **जबेरी बाजार** में पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री अहमदाबाद, **दादर** में पण्डित कमलकुमारजी जैन जबेरा, **घाटकोपर** में पण्डित कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, **मलाड (ईस्ट)** में पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलियाँ, **मलाड (वेस्ट)** में पण्डित ज्ञायकजी जैन राजकोट एवं पण्डित सौरभजी जैन शहपुरा, **बोरीवली** में पण्डित शैलेषभाई पी. शाह मुम्बई, **भायंदर** में पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन तथा **दहीसर** में पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ स्थानीय समाज को मिला।

5. **अजमेर (राज.) :** यहाँ श्री वीतराग-विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में श्री सीमन्धर जिनालय में श्री समयसार-कलश मण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर के प्रवचन हुये। प्रथम दिन पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचनों का लाभ मिला। विधान के कार्य श्री हीराचन्दजी बोहरा के निर्देशन में पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित सुनीलजी 'धवल' ने सम्पन्न कराये।

श्रुत विराजमानकर्त्ता श्री अशोककुमारजी जैन परिवार दिल्ली थे। झण्डारोहण श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ़ ने किया। **ह्न विजय जैन**

6. **दिल्ली :** यहाँ अध्यात्मतीर्थ आत्मसाधना केन्द्र पर श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। प्रतिदिन प्रात: ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' ललितपुर के समयसार एवं रात्रि में पण्डित जयकुमारजी जैन बांरा के विधान की जयमाला पर प्रवचन हुये।

विधि-विधान के समस्त कार्य विधानाचार्य पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री पिड़ावा एवं पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर ने सम्पन्न कराये। स्थानीय विद्वान पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित अमितजी शास्त्री, पण्डित निकलंकजी शास्त्री एवं पण्डित सुरेन्द्रजी का सहयोग रहा।

7. **सहारनपुर (उ.प्र.) :** यहाँ श्री दि. जैन चौवीस तीर्थंकर जिनालय महावीर कॉलोनी में श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन हुआ। विधि-विधान के कार्य पण्डित अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित अश्विनजी नानावटी नौगाँमा ने सम्पन्न कराये। प्रतिदिन पण्डित अभिनन्दनकुमारजी के विधान की जयमाला पर एवं पण्डित अश्विनजी के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। अन्तिम दिन जुलुस निकालकर नगर परिभ्रमण हुआ।

8. **पंढरपुर (महा.) :** यहाँ श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर में पर्व के अवसर पर 64 ऋद्धि विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित प्रशांतकुमारजी मोहरे, सोलापुर ने सम्पन्न कराये। प्रतिदिन प्रात: छहढ़ाला एवं रात्रि में युवा वर्ग को ध्यान में रखते हुये जैन सिद्धान्तों पर पण्डित प्रशांतजी के मार्मिक प्रवचन हुये। **ह्न प्रणय दोशी**

जिनालय का शिलान्यास : गुजरात राज्यपाल द्वारा

उमता (मेहसाणा-गुज.) : यहाँ गुजरात के राज्यपाल पण्डित नवलकिशोर शर्मा ने मंत्रोच्चारण के बीच कमल जिनालय का शिलान्यास किया। पाँच वर्ष पूर्व उत्खनन में यहाँ 11 वीं शताब्दी का अत्यन्त कलात्मक एवं विशाल जैनमंदिर तथा दिगम्बर जैन मूर्तियाँ प्राप्त हुई थीं। जिस स्थान पर यह धरोहर प्राप्त हुई वहाँ 35 फीट ऊँचा टीला था तथा उस पर गत 125 वर्षों से एक सरकारी स्कूल चल रहा था।

मंदिर को पुरातत्त्व विभाग ने अपने आधीन लेकर संरक्षित स्मारक घोषित कर दिया तथा सभी प्रतिमायें इस मंदिर की खोज के प्रेरक आचार्य निर्भयसागरजी के नाम से बनीं जन कल्याण समिति के संरक्षण में दे दी। ग्राम पंचायत ने मंदिर निर्माण हेतु 4 एकड़ भूमि प्रदान की है। समारोह के विशिष्टअतिथि पाली लोकसभा सदस्य श्री पुष्प जैन एवं अध्यक्ष श्री मिलापचन्द डंडिया थे।

सिद्धचक्र विधान सम्पन्न

कोलकाता : यहाँ श्री दि. जैन मन्दिर पद्मोपुकुर में 31 मार्च से 5 अप्रैल तक श्री अशोकजी पाटनी परिवार द्वारा सिद्धचक्रमण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रतिदिन प्रात: रहस्यपूर्ण चिट्ठी पर मार्मिक प्रवचन हुये। रात्रि में ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के विधान की जयमाला पर तथा ब्र. सुमतप्रकाशजी के उपादान-निमित्त की चिट्ठी पर प्रवचन हुये।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पण्डित मनीषजी पिड़ावा, पण्डित सुबोधजी शाहगढ एवं पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल ने सम्पन्न कराये।

महावीर जयन्ती के अवसर पर डॉ. भारिल्ल भोपाल में ...

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ दिग. जैन पंचायती ट्रस्ट कमेटी की ओर से जंगलवाले बाबा के नाम से प्रसिद्ध मुनि श्री चिन्मयसागरजी तथा मुनिश्री अनंतानंदसागर जी के सान्निध्य में दो दिवसीय महावीर जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया। आप दोनों मुनिराजों के प्रवचनों से समाज लाभान्वित हुआ।

इस अवसर पर कमेटी के हार्दिक आमंत्रण पर पधारे अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के जवाहर चौक, खुले मैदान में सार्वजनिक सभा में भगवान आत्मा पर और चौक धर्मशाला में मुनिराजों के सान्निध्य में णमोकार महामंत्र, जैन समाज की एकता और भगवान महावीर के जीवन पर तीन व्याख्यान हुये।

मुनिराजों ने अपने प्रवचनों में डॉ. भारिल्ल की भावना का खुले दिल से समर्थन करते हुये संस्था की गतिविधियों का स्वागत किया।

इस अवसर पर म.प्र. शासन के उद्योगमंत्री श्री बाबूलाल गौर, वित्तमंत्री श्री राघवजी भाई, नगर निगम के महापौर श्री सुनीलजी सुत एवं अध्यक्ष श्री रामदयालजी प्रजापति आदि गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। समारोह में लगभग 5 हजार साधर्मियों ने लाभ लिया। **ह्न देवेन्द्र बड़कुल**

उपकार दिवस सानन्द सम्पन्न

दिल्ली : यहाँ पंचकल्याणक की प्रथम वर्षगांठ एवं गुरुदेवश्री के 117 वें जन्म दिवस के प्रसंग पर आत्मसाधना केन्द्र में 8 व 9 अप्रैल को द्विदिवसीय समारोह का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का उपकार दिवस से संबंधित विशेष प्रवचन का लाभ मिला। साथ ही मुख्यअतिथि श्री पुनीत जैन (प्रकाशक नवभारत टाइम्स) का भी विशेष उद्बोधन हुआ। दोपहर में आयोजित विद्वत्संगोष्ठी का संचालन डॉ. सुदीप जैन ने किया। संगोष्ठी के पूर्व गुरुदेवश्री के जीवन-चरित्र संबंधित वी.सी.डी. का प्रसारण किया गया। रात्रि में आयोजित आध्यात्मिक कवि सम्मेलन का संचालन डॉ. वीरसागरजी जैन ने किया।

समारोह में पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र. कैलाशचन्दजी अचल, पण्डित गोकुलचन्दजी सरोज, पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा आदि का समागम प्राप्त हुआ। दोनों दिन गुरुदेवश्री के सी.डी.प्रवचन का लाभ मिला। कार्यक्रम ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये।

ज्ञातव्य है कि समारोह से पूर्व दिल्ली के उपनगर शाहदरा एवं माडल बस्ती में भी डॉ. भारिल्ल के एक-एक प्रवचन का लाभ मिला।

पश्चाताप (खण्डकाव्य) : एक मनमोहक कृति

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित अप्रकाशित कृति **पश्चाताप-खण्डकाव्य** एक बहुत सुन्दर पद्यमय कृति है; जिसमें राम के मन में सीता की अग्निपरीक्षा के बाद व्याप्त अन्तर्द्वन्द का अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया गया है। कोलकाता, भोपाल एवं दिल्ली में आयोजित कार्यक्रमों के दौरान इसका पाठ किया गया, जिसने समस्त श्रोताओं का मन मोह लिया।

विद्वत्संगोष्ठी सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : जैन अनुशीलन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर तथा त्रिलोक उच्चस्तरीय अध्ययन एवं अनुसंधान संस्थान, कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 19 से 21 मार्च, 2006 तक **पुराण-साहित्य में जीवन मूल्य** विषय पर त्रिदिवसीय 24 वीं अखिल भारतीय जैन विद्या संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

19 मार्च को राजस्थान विश्वविद्यालय के सीनेट हॉल में प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. एन. के. जैन (कुलपति, राज. वि.वि.) ने की। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री एन. के. जैन (अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग राज.) तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. टी.सी. कोठारी दिल्ली एवं श्री महावीरराज गैलड़ा (पूर्व कुलपति, जैन विश्वभारती) थे।

मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, जयपुर** ने 'पुराणों में जीवन मूल्य' के सन्दर्भ में कहा कि हमें जीवन मूल्यों को मनुष्य तक ही सीमित नहीं रखना चाहिये; क्योंकि जीवन तो कीड़े-मकोड़े, पेड़-पौधों का भी है। अत: हमें उस स्तर से अपनी बात सोचनी चाहिये। उन्होंने अपने उद्बोधन में भगवान महावीर की सिंह पर्याय तथा नेमिकुमार की बारात के वापस लौटने के प्रसंग का वैज्ञानिक एवं तार्किक विवेचन करते हुये उन आख्यानों में छिपे हुये मार्मिक बिन्दुओं को उजागर किया।

समारोह का शुभारंभ डॉ. रमेशचन्दजी निवाई ने दीपप्रज्वलन करके किया। विषय का प्रवर्तन डॉ. पी.सी. जैन एवं श्री राजकुमारजी काला ने किया। उद्घाटन सत्र के पश्चात् संगोष्ठी में आये हुये सभी विद्वानों को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा सत्साहित्य भेंटकर सम्मानित किया गया।

संगोष्ठी के विविध सत्रों की अध्यक्षता पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित शिवचरणजी जैन मैनपुरी, प्रो. दयानन्दजी भार्गव, पण्डित ज्ञानचन्दजी बिल्टीवाला, पण्डित ज्ञानचन्दजी खिन्दूका ने की।

समारोह में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, पण्डित ज्ञानचन्दजी खिन्दूका, डॉ. पी.सी. रांवका, श्री अखिलजी बंसल, ब्र. भरतभाई, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री, डॉ. अनामिका जैन आदि 60 विद्वानों ने अपने पत्र के माध्यम से पुराणों में वर्णित जीवन मूल्यों को विविध दृष्टिकोणों से प्रतिपादित किया।

सभी सत्रों में संचालन डॉ. पी.सी. रांवका एवं श्रीमती कोकीला सेठी ने किया।

दिनांक 21 मार्च को समापन समारोह के मुख्यअतिथि पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवचरण माथुर थे। अध्यक्षता प्रो.एम.एल.छीपा ने की। इस अवसर पर वयोवृद्ध शिक्षाविद् श्री तेजकरणजी डंडिया, प्रो. हरिराम आचार्य, श्री राजकुमारजी काला एवं श्री विवेकजी काला का सम्मान किया गया तथा देवर्षि कलानाथ शास्त्री के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला।

त्रि-दिवसीय इस विद्वत्संगोष्ठी का संयोजन एवं निर्देशन डॉ. पी.सी. जैन ने किया।

डॉ. भारिल्ल का 2006 में विदेश कार्यक्रम

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी धर्मप्रचारार्थ विदेश जा रहे हैं। अमेरिका की यह उनकी 23 वीं विदेश यात्रा है। जिन भारतवासी बन्धुओं के परिवार या सम्बन्धी निम्न स्थानों पर रहते हों, वे उन्हें सूचित कर दें। उनकी सुविधा के लिए वहाँ के फोन नं. एवं फैक्स नं. यहाँ दिये जा रहे हैं, जिनके यहाँ डॉ. भारिल्ल ठहरेंगे।

उनका नगरवार कार्यक्रम निम्नानुसार है ह्न

क्र.	शहर	सम्पर्क-सूत्र	दिनांक
1.	मियामी	महेन्द्र शाह (घर) 305-595-3833 (ऑ.)305-371-2149 E-mail : bhitap@bellsouth.net	26 मई से 1 जून
2.	डलास	अतुल खारा (घर) 972-867-6535 (ऑ.)972-424-4902(फै.)972-424-0680 E-mail : insty@verizon.net	2 से 8 जून
3.	न्यूयॉर्क	डॉ. धीरूभाई शाह (घर) 516-922-6056 (मो.) 516-603-4178	9 से 12 जून
4.	लॉसएंजिल्स	नरेश पालकीवाला (घर) 562-404-1729 (ऑ.) 626-814-8425 (एक्स.8725)	13 से 18 जून
5.	शिकागो	निरंजन शाह 847-330-1088 डॉ. विपिन भायाणी (घर) 815-939-0056 (ऑ.) 815-939-3190 (फै.) 815-939-3159	19 से 29 जून
6.	हर्टफोर्ड	अतुल खारा (घर) 972-867-6535 (ऑ.)972-424-4902(फै.)972-424-0680 E-mail : insty@verizon.net	30 जून से 4 जुलाई
7	क्लीवलैंड	कुशल बैद (घर) 440-339-9519 E-mail : kushalbaid@att.net	4 से 11 जुलाई
8.	वाशिंगटन डी.सी.	नरेन्द्र जैन (घर) 703-426-4004 (फै.) 703-321-7744 E-mail : jainnarendra@hotmail निरेन नागदा 301-540-7708	12 से 17 जुलाई